अध्याय 19

अशुद्धता का विरोध करना

परमेश्वर की पवित्र जाति होने के कारण इस्राएल के लिए आवश्यक था कि वह अशुद्धता से दूर रहे। फिर भी किसी मृत व्यक्ति के द्वारा अशुद्ध होने से बचा नहीं जा सकता था। जैसा इस्राएल भटक रहा था और निरन्तर मृत्यु स्थान ले रही थी इसलिए मृत व्यक्ति के विषय में किस प्रकार स्थिति को सँभाला जाए यह प्रतिदिन की आवश्यकता थी।[1] गिनती 19 में पायी जाने वाली व्यवस्था विवरण देती है कि मृत्यु किस प्रकार अशुद्ध कर देती है और उस अशुद्धि का निवारण उपलब्ध करवाती है।

पहले निवारण प्रस्तुत किया गया है (19:1-10)। तब वे पद विवरण देते हैं कि मृत्यु के सम्पर्क में आने के परिणामस्वरूप अशुद्धता की समस्या के लिए उस निवारण को किस प्रकार लागू किया जाना चाहिए (19:11-22)।

बलिदान की विधि (19:1-10)

**1फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा
यहोवा देता है वह यह है: तू इस्राएलियों से कह कि मेरे पास एक लाल निर्दोष
बछिया ले आओ, जिसमें कोई भी दोष न हो, जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो।
3तब उसे एलीआज़ार याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए, और
कोई उसको उसके सामने बलिदान करे; 4तब एलीआज़ार याजक अपनी उंगली से
उसका कुछ लहू लेकर मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर सात बार छिड़क दे।
5तब कोई उस बछिया को खाल, मांस, लहू, और गोबर समेत उसके सामने जलाए;
6और याजक देवदारु की लकड़ी, जूफा, और लाल रंग का कपड़ा लेकर उस आग में
जिसमें बछिया जलती हो डाल दे। 7तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, इसके
बाद छावनी में तो आए, परन्तु साँझ तक अशुद्ध रहे। 8और जो मनुष्य उसको
जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे।
9फिर कोई शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध
स्थान में रख छोड़े; और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से
छुड़ानेवाले जल के लिये रखी रहे; वह पापबलि है। 10और जो मनुष्य बछिया की
राख बटोरे वह अपने वस्त्र धोए, और साँझ तक अशुद्ध रहे। और यह इस्राएलियों
के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे।"**

आयतें 1, 2. शुद्धिकरण का एक तरीका बताते हुए परमेश्वर ने **मूसा और हारून** को निर्देश दिए कि वे **एक लाल निर्दोष बछिया** ले आएँ **जिसमें कोई भी दोष न हो**। "निर्दोष" और "जिसमें कोई भी दोष न हो" ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग आम तौर पर बलिदान के लिए एक स्वस्थ उपयुक्त पशु का वर्णन करने के लिए किया जाता था। अनुवाद किया गया शब्द "बछिया," פָּרָה *(पराह),* "गाय" के लिए इब्रानी शब्द है। इसका अनुवाद "बछिया" किया गया - अर्थात एक इतनी जवान गाय जिसने अब तक किसी बछड़े को जन्म नहीं दिया है - क्योंकि एक जवान पशु इस माँग को पूरा करता था कि उस पर **जूआ कभी न रखा गया हो**।[2] यहाँ "जूआ" शब्द यह अर्थ देता है कि पशुओं को प्राथमिक रुप से हल या छकड़ा गाड़ी खींचने के लिए काम में लिया जाता था। यहाँ पर बताई गई बछिया वह थी जिसका प्रयोग सामान्य उद्देश्यों के लिए कभी भी किया हुआ नहीं था।

मूसा और हारून को दी गई आज्ञा **व्यवस्था की वह विधि जिसकी आज्ञा यहोवा देता है**, कहलाती है। लौरिस्टन जे. डू बोइस के अनुसार "यह अभिव्यक्ति अद्वितीय है और शीघ्र ही दी जाने वाली व्यवस्था के प्रति सर्वोच्च महत्व स्थापित करती है।"[3] क्लाइड एम. वुड्स और जस्टिन एम. रॉजर्स का विचार कि "*व्यवस्था की माँग* नामक अभिव्यक्ति [NIV] शायद शुद्धि की रीति" पर बल देगी जिसका वर्णन किया गया था।[4]

आयतें 3-6. तब लाल बछिया को **एलीआज़ार याजक** के द्वारा **छावनी से बाहर** ले जाना था जहाँ **उसे उसके सामने बलिदान** किया जाना था। इस काम के लिए एलीआज़ार को हारून महायाजक के स्थान में क्यों चुना गया? शायद महायाजक के लिए यह उचित नहीं था कि वह लाल बछिया की राख की तैयारी के सम्बन्ध में अशुद्ध हो जाए।

एलीआज़ार के लिए यह आवश्यक था कि वह **अपनी उंगली** को बलिदान की हुई बछिया के **लहू** में डुबोए और उसमें से मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर **सात बार छिड़क** दे। पश्चात्ताप और शुद्धि की अन्य विधियों में भी सात बार लहू छिड़कने की आवश्यकता होती थी (लैव्य. 4:6, 17; 14:51; 16:14, 19)।

इसके बाद उस पशु को उसके सम्पूर्ण में - उसकी **खाल, मांस, लहू, और गोबर समेत** - एलीआज़ार के सामने **जलाना** होता था। जब बलिदान जल जाता था तब एलीआज़ार को **देवदारु की लकड़ी, जूफा, और लाल रंग का कपड़ा** लेकर उस आग में जिसमें बछिया जलती हो डालना होता था (देखें लैव्य. 14:4, 6, 49, 51, 52)। "देवदारु की लकड़ी" और "लाल रंग का कपड़ा" बछिया की लाल खाल के साथ मिला दिया जाता था और पशु के शेष भाग के साथ लहू भी जल जाता था, इस प्रकार ये सब लाल रंग पर बल देते थे और यह सुझाव देते थे कि यह मिश्रण बलिदान के किसी पशु के लहू के समान काम करता था।[5]

आयतें 7, 8. याजक और वह व्यक्ति जिसने बछिया को छावनी के बाहर जलाया वे दोनों ही **साँझ तक अशुद्ध** रहते थे क्योंकि उन्होंने स्वयं को उस लोथ के सम्मुख प्रस्तुत किया। उनके लिए आवश्यक था कि वे फिर से शुद्ध होने के लिए अपने वस्त्र **धोए** और **स्नान करे**।

आयतें 9, 10. जब बछिया पूरी तरह से जल जाए तब कोई **शुद्ध पुरुष ... राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े।** राख का बर्तन **अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल** के काम में लेने के लिए रख लिया जाता था।[6] जिस व्यक्ति ने राख को शुद्ध स्थान तक पहुँचाया वह इसके द्वारा अशुद्ध हो जाता था; इस कारण उसे भी अपने **वस्त्र धोने** होते थे और वह **साँझ तक अशुद्ध** रहता था। रब्बियों का एक कथन इन आयतों में राख के वर्णन के विरोधाभास पर पकड़ बनाता है: "वे अशुद्ध को शुद्ध करते हैं और शुद्ध को अशुद्ध करते हैं।"[7]

यह भाग ऐसा कहते हुए समाप्त होता है कि यह व्यवस्था **सदा की विधि** ठहराए जाने के लिए थी। इसका अर्थ यह है कि प्रायः जब कभी आवश्यकता हो तब लाल **बछिया** की विधि दुहराई जाए। यह छावनी में **इस्राएलियों के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों** (गैर इस्राएलियों) के लिये समान रूप से लागू होती थी।

अनुप्रयोग (19:11-22)

11"जो किसी मनुष्य का शव छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे; 12ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन अपने आपको पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा। 13जो कोई किसी मनुष्य का शव छूकर पाप छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा के निवास-स्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी इस्राएल में से नष्ट किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उसमें बनी रहेगी। 14यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है: जितने उस डेरे में रहें, या उसमें जाएँ, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहें। 15और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा न हो, वह अशुद्ध ठहरे। 16और जो कोई मैदान में तलवार से मारे हुए को, या अपनी मृत्यु से मरे हुए को, या मनुष्य की हड्डी को, या किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक अशुद्ध रहे। 17अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए; 18तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र और मनुष्य उस में हों, उन पर छिड़के, और हड्डी के, या मारे हुए के, या अपनी मृत्यु से मरे हुए के, या कब्र के छूनेवाले पर छिड़क दे; 19वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और जल से स्नान करके साँझ को शुद्ध ठहरे। 20जो कोई अशुद्ध होकर अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए, वह प्राणी यहोवा के पवित्रस्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली के बीच में से नष्ट किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा। 21और यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह

अपने वस्त्रों को धोए; और जिस जन से अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छू जाए वह भी साँझ तक अशुद्ध रहे। [22]और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध ठहरे; और जो प्राणी उस वस्तु को छूए वह भी साँझ तक अशुद्ध रहे।"

अध्याय 19 के दूसरे भाग में, शव छूने की अशुद्धता और इससे दोबारा कैसे शुद्ध हो सकते हैं, को संबोधित किया गया है। आयतें 11 से 22 में पाई जाने वाली विधियां, लैव्यव्यवस्था 11-15 और गिनती 5 (5:1-3 पर की गई टिप्पणी देखें) में पाई जाने वाली विधियों का विस्तारीकरण करता है। पूर्ववर्ती विधियों में यह उल्लेख किया गया था कि अशुद्धता के गम्भीर मामलों में (मृत्यु के कारण उत्पन्न हुई अशुद्धता की स्थिति में), सात दिन के समयान्तराल में बलिदान चढ़ाया जाना चाहिए था।

आयतें 11, 12. मूसा ने एक विधि के साथ आरंभ किया था और विभिन्न परिस्थितियों में उन विधियों का अनुप्रयोग जारी रखा। यह विधि इन आयतों में वर्णित हैः **"जो किसी मनुष्य का शव छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे; ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन अपने आपको पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा।"** यदि वह ठहराए गए दिनों में **अपने आपको पावन न करे**, तो वह **शुद्ध न ठहरेगा**।

आयत 13. जोर देने के लिए कि अपने आपको **शव छूने** के बाद **पावन** करने में असफल होने का विश्लेषण इस आयत में किया गया हैः जो कोई इस प्रकार का पाप करके **अपने को पावन कर**ने में असफल रहता है, वह न केवल अपने आपको अशुद्ध करता है बल्कि **यहोवा के निवास-स्थान को भी अशुद्ध करनेवाला ठहर[ता] है**। परिणामस्वरूप, उसको इस्राएलियों के बीच से **नष्ट कर दिया जाना चाहिए** था; वह मृत्युदण्ड का भागी होगा (देखें 9:13; 15:30, 31)।

आयतें 14-16. शव छूने के अलावा (19:11), इस अनुच्छेद में मृत्यु द्वारा दो अन्य माध्यमों से अशुद्ध होने की चर्चा की गई है। कोई भी मनुष्य (1) जब किसी की मृत्यु के समय उसके डेरे में हो या (2) मैदान में मरे हुए को छूए, तो वह **अशुद्ध** ठहर सकता था। मैदान में तलवार से मारे हुए या **सामान्य रूप से मरे** हुए को छूने से कोई भी अशुद्ध ठहर सकता था, लेकिन **मनुष्य की हड्डी व कब्र** को भी छूने से कोई भी अशुद्ध ठहर सकता था।[8] यह अशुद्धता **सात दिन** तक रहता था।

आयत 17. अशुद्धता कैसी भी हो, शुद्ध होने की प्रक्रिया एक जैसे ही थी: पापबलि की **राख** में से कुछ लेकर **पात्र में** डालकर उस पर **सोते का जल** डाला जाए। वुड्स और रॉजर्स ने लाल बछिया को बलिदान नहीं समझा।[9] जबकि अन्य लोगों की मान्यता है कि लाल बछिया का जलाना बलिदान था।[10]

आयतें 18, 19. शुद्ध मनुष्य, को **जूफा** जल में **डुबोकर**, जो कुछ अशुद्ध हुआ था, **उस पर छिड़कना** थाः **डेरा, पात्र**, और **जो लोग वहाँ थे**, उस पर भी **जिसने हड्डी और कब्र** या शव **छुआ हो**। इस प्रक्रिया को **तीसरे दिन और सातवें दिन** दोहराया जाना चाहिए था। ये सभी अर्हताएं पूरी करने के पश्चात, वह **सांझ को**

शुद्ध ठहरेगा।

आयतें 20, 21. जो कोई अशुद्ध होकर अपना पाप छुड़ाकर अपने को पावन करने की प्रक्रिया पूरी न करता हो, उसको इस्राएल की **मण्डली के बीच में से नष्ट कर दिया जाना चाहिए था**, क्योंकि उसने **यहोवा के पवित्रस्थान को अशुद्ध किया था** और अपनी **अशुद्धावस्था** में ही रह रहा था। जो **अशुद्धता** की जल छिड़कने वाले थे या जिन्होंने **उसे छुआ भी हो** उनको अपने वस्त्र धो लेना चाहिए था और **सांझ तक अशुद्ध ठहरे** रहना चाहिए था। अशुद्धता से शुद्ध होना स्वयं अशुद्धता था। यद्यपि, जो शुद्ध होने की जल से अशुद्ध हो जाता था, वह उस मनुष्य के समान अशुद्ध नहीं होता था, जिस पर अशुद्धता से शुद्ध होने का जल छिड़का जाता था क्योंकि वह सांझ तक ही अशुद्ध ठहरा रहता था और जिस पर शुद्ध होने का जल छिड़का जाता था वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरा रहता था। जो लाल बछिया का राख छूते थे वे भी सांझ तक अशुद्ध ठहराए जाते थे (19:10)।

ऐसा यह कैसे हो सकता था? ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर को अप्रसन्न करने से शुद्ध होने की सामग्री बहुत सामर्थशाली थी और इसलिए उसको छूना घातक था। हम अशुद्धता को दूर करने की इस समाधान की तुलना को विकिरण चिकित्सा द्वारा कैंसर के कीटाणुओं को नष्ट करने से, कर सकते हैं। जो व्यक्ति इस यंत्र को, जो कैंसर की विकिरण पर केन्द्रित करता है, संचालित करता है, उसको स्वयं इस विकिरण के प्रभाव से बचना चाहिए। जो कैंसर की मरीज़ को स्वस्थ करता है वह उस व्यक्ति को नुक्सान भी पहुँचा सकता है, जो इसे प्रयोग करता है। यदि दुर्घटनावश यंत्र चलाने वाला विकिरण के प्रभाव में आ जाता है तो इसके खतरे से स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए, उसे अविलंब इसके प्रभाव को कम करने के लिए कुछ करना चाहिए। उसी तरह, "अशुद्धता से छुड़ाने वाला जल" अशुद्धता की समस्या का समाधान करने में प्रभावी सिद्ध होता था लेकिन इसको लगाने वाले पर इसका नकारात्मक प्रभाव होता था। यह छिड़कने वालों को भी अशुद्ध कर देता था और उनको दोबारा शुद्ध होने के लिए कुछ करने की आवश्यकता थी।

आयत 22. अंततः यह अनुच्छेद यह बताता है कि अशुद्धता संक्रामक थाः जो कुछ भी **अशुद्ध मनुष्य छूता** था वह **अशुद्ध** हो जाता था; और यदि किसी ने उस वस्तु को **छूआ** तो यह उस **मनुष्य** को **सांझ तक अशुद्ध ठहराता था।**

अनुप्रयोग

शुद्धता के प्रति समर्पण (अध्याय 18; 19)

याजकों, लेवियों, एंव लाल बछिया में क्या सामान्य सकता था? इस्राएलियों के डेरे से हरेक को अशुद्धता दूर करने की भूमिका निभानी थी। आइये हम देखें कि यह पाठ इन तीनों के बारे में क्या कहता है।

शुद्धता बनाए रखने में इस्राएलियों की महत्ता। अपने लोगों में से परमेश्वर ने याजकों और लेवियों को विशिष्ट कार्य - कठिन कार्य करने के लिए चुना था। याजकों की क्या जिम्मेदारियां थी? अध्याय 18 "फिर यहोवा ने हारून से कहा,

'पवित्रस्थान के अधर्म का भार तुझ पर, और तेरे पुत्रों और तेरे पिता के घराने पर होगा; और तुम्हारे याजककर्म के अधर्म का भार भी तेरे पुत्रों पर होगा,'" से प्रारंभ होता है। इस संदर्भ में इसका वर्णन नहीं है लेकिन यहाँ यह तथ्य अन्तर्निहित है कि याजकों को बलिदान चढ़ाना था और पवित्रस्थान में सेवाकार्य करना था। पवित्रस्थान के "अधर्म का भार" उठाने का तात्पर्य यह था कि याजकों को पवित्रस्थान को शुद्ध रखने की जिम्मेदारी सुनिश्चित करना था। यदि किसी कारणवश निवासस्थान अशुद्ध किया जाता था - यदि डेरे या इसकी पवित्र पात्रों का दुरुपयोग किया जाता था, या यदि कोई परमेश्वर के लिए या परमेश्वर के कार्य के लिए अलग नहीं किया गया था, वह इन पवित्र पात्रों को छूता था - तब याजक को इस अधर्म का भार उठाना पड़ता था। वे परमेश्वर द्वारा अधर्म गिने जाते और इस पाप के लिए उनको दण्ड दिया जाता!

याजकों को कितनी विस्मयकारी जिम्मेदारी सौंपी गयी थी! परमेश्वर का इस्राएलियों के प्रति भला व्यवहार याजकों के बर्ताव पर निर्भर करता था। जब तक वे पवित्रस्थान की पवित्रता को बनाए रखते थे तब तक परमेश्वर की आशीष भी उनके साथ बना रहता था। इस प्रकार की भारी जिम्मेदारी के साथ, इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनको यह सौभाग्य भी प्राप्त था।

जबकि याजक लेवी गोत्र के थे, लेकिन सभी लेवी याजक नहीं थे। केवल हारून के पुत्र ही याजक का काम कर सकते थे, जबकि दूसरे लेवी उनकी सहायता करते थे। याजकों के सहायक होने के नाते, परमेश्वर ने लेवियों को जिम्मेदारियां भी दी थी। प्राथमिक रूप से, उनको याजकों और पवित्रस्थान की आवश्यकता की पूर्ति करना था। उनको याजकों को निवासस्थान में किए जानेवाली सेवा में सहायता करना था (18:2-4)। इसके साथ ही उनको "मिलापवाले तम्बू की सेवा भी करना" था (18:6; देखें 18:31)। याजकों के समान, लेवियों को "पवित्रस्थान के पात्रों और वेदी के समीप नहीं आना" था, ऐसा न हो कि उनको मृत्युदण्ड दिया जाता (18:3)। लेवियों के बारे में अध्याय 3, 4, और 8 में और अधिक जानकारियां दीं गईं हैं।

लेवियों के बारे में एक और जिम्मेदारी गिनती 18:22 में बताया गया है: "इस्राएली मिलापवाले तम्बू के समीप न आएं, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और वे मर जाएं।" चूँकि संदर्भ लेवियों के कर्तव्यों से संबंधित है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह आयत यह कहती है कि निवासस्थान की रक्षा करना उनकी जिम्मेदारी थी और उनको यह सुनिश्चित करना था कि कोई अनाधिकृत व्यक्ति उसके समीप न आ जाय।

इसके साथ ही, लेवियों का यह उत्तरदायित्व था कि जो कुछ वे प्राप्त करते थे, उसमें से वे परमेश्वर को दें। लोग उनको दशवांश देते थे और वे जो प्राप्त करते थे, उसका दशवांश उनको परमेश्वर को देना था। 18:26-32 में दिए गए निर्देश यह दिखाता है कि जो उनको दिया जाता था उसका सर्वोत्तम उनको परमेश्वर को भेंट करना था। उनका दशवांश - यद्यपि दूसरे लोगों द्वारा दिया गया भेंट था - वह परमेश्वर को ग्रहणयोग्य था मानो जैसे उन्होंने स्वयं खेती बाड़ी की हो और उसका

फल उन्होंने परमेश्वर को भेंट चढ़ाया हो। यदि लेवी लोग, लोगों द्वारा लाए गए भेंट में से परमेश्वर का भाग उसको देने में असफल होते, तब वे "इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं" को अशुद्ध करने के दोषी ठहरते और फिर उनको मृत्यु दण्ड भोगना पड़ता (18:32)।

अध्याय 19 याजकों और लेवियों की विषयवस्तु से हटकर अशुद्धता की विधियों के बारे में बताता है। इस अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

गिनती 19:1-10 में, परमेश्वर ने अशुद्धता से छुटकारा प्राप्त करने के लिए लाल बछिया का प्रावधान प्रस्तुत किया। उसने महायाजक को डेरे के बाहर एक लाल बछिया बलि करने के बारे में बताया और तब उसको उसके लहू को "मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर छिड़कने" के लिए कहा (19:4)। तब याजक को लाल बछिया को "देवदारू की लकड़ी, जूफा, और लाल रंग का कपड़ा के साथ उसे आग में जलाना था" (19:6)। तब याजक को अपनी अशुद्धता दूर करने के लिए स्नान करना था, और जिस व्यक्ति ने लाल बछिया को आग में जलाया था उसको भी वैसा ही करना था (19:7, 8)। लाल बछिया की राख का निपटारा करने के लिए परमेश्वर ने यह निर्देश दिए:

> फिर कोई शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े; और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ाने वाले जल के लिये रखी रहे; वह तो पापबलि है (19:9)।

तब उस व्यक्ति को बछिया की राख के संपर्क में आने के कारण स्नान करना था। इस प्रकार, पानी में मिलाकर लाल बछिया का राख, लोगों की अशुद्धता दूर करने का साधन बन जाता था।

इस अध्याय का दूसरा अनुभाग 19:11-16, यह बताता है कि यदि कोई मरे हुए व्यक्ति के शव के संपर्क में आता था तो वह अशुद्ध हो जाता था। उसकी अशुद्धता सात दिन तक रहता था। अपनी अशुद्धता से शुद्ध होने के लिए, अशुद्धता के दिन के तीसरे और सातवें दिन, पावन करने वाली जल से उसको स्नान करना था। जब वह निर्धारित नियमों का पालन करता था तो वह शुद्ध हो जाता था; यदि वह उचित तरीके से अपने आपको शुद्ध करने में असफल रहता तो वह अशुद्ध ही ठहरा रहता था (19:12, 13)।

इस अध्याय का तीसरा अनुभाग 19:17-22, लाल बछिया की राख को लोगों को शुद्ध करने के लिए कैसे प्रयोग किया जाय, का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। एक अशुद्ध व्यक्ति को शुद्ध होने के लिए तीन बातों का ध्यान रखना था: (1) लाल बछिया की राख में मिला पावन करने वाला जल, (2) पावन करने वाला मिश्रण को छिड़कने वाला एक शुद्ध व्यक्ति, और (3) शुद्ध होने की चाह रखने वाला व्यक्ति। उस अशुद्ध व्यक्ति के बारे में जिसने "अपने आपको अशुद्धता से शुद्ध" नहीं किया था, पाठ यह कहता है, "वह मण्डली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ाने वाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण से वह अशुद्ध ठहरेगा"

(19:20)। व्यवस्था के अधीन अशुद्ध होने का परिणाम मृत्युदण्ड नहीं था, लेकिन अशुद्ध होना और शुद्ध होने से इनकार करने का परिणाम मृत्युदण्ड था। यह अशुद्ध व्यक्ति को मण्डली के बीच में से नाश करना था या इसको दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वह मृत्युदण्ड के अधीन था! 19:21, 22 में शुद्ध होने की दो अन्य प्रक्रिया के बारे में कहा गया हैः (1) जिस शुद्ध व्यक्ति ने अशुद्ध व्यक्ति पर शुद्ध करने वाला जल छिड़का वह स्वयं "सांझ तक" अशुद्ध ठहरता और (2) अशुद्धता संक्रमित था। अशुद्ध व्यक्ति जो भी छूता था वह "सांझ" तक अशुद्ध ठहरता था।

संभवतः अध्याय 18 और 19 में जो मुख्य विषय प्रस्तुत किया गया है उनको एक साथ लिया जाय, तो यह इस्राएल में संस्कार शुद्धता और शुद्धता बनाए रखने में याजकों और लेवियों की भूमिका के महत्व बताता है।

शुद्धता बनाए रखने का निहितार्थ। यह अनुच्छेद हम पर कैसे लागू होता है? प्राथमिक रूप से, यह हमको यह सुझाव देता है कि आज परमेश्वर के लोगों को शुद्धता, और पवित्रता के प्रति गम्भीर होने की आवश्यकता है। कलीसिया एक "पवित्र याजकों" का समाज है (1 पतरस 2:5); जैसा परमेश्वर पवित्र है वैसे ही मसीहियों को भी पवित्र होने के लिए बुलाया गया है (1 पतरस 1:15, 16)। इसलिए, हम मसीहियों को व्यक्तिगत् रूप से शुद्ध रहने के लिए बुलाया गया है (रोम. 12:1, 2; 1 तीमु. 5:22)। जिस तरह इस्राएलियों ने मरे हुए व्यक्ति के शव से अपने आपको दूर रखा था, चूँकि वे जानते थे कि शव उनको अशुद्ध ठहराता था, तो उसी तरह मसीहियों को जगत की शवों - अर्थात् वह पाप जो भ्रष्ट करता है और आत्मा को मार डालता है, से अपने आपको दूर रखना है।

न केवल हम अपने आपको पवित्र रखने के प्रति गम्भीर हों, बल्कि हमको कलीसिया जो मसीह की देह है, को भी पवित्र रखने के प्रति गम्भीर होना है। यीशु ने "उस को [कलीसिया] वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाया। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ा किया, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो" (इफि. 5:26, 27)। वस्तुतः, कलीसिया को शुद्ध रखने के लिए, पौलुस ने कुरिंथियों की मण्डली को उस भाई से संगति करने से बचने के लिए कहा था जो खुलेआम अनैतिक जीवन जी रहा था (देखें 1 कुरि. 5)। क्यों? क्योंकि वह उस पापी भाई से घृणा करता था या फिर वह चाहता था कि कलीसिया उससे घृणा करे? नहीं, क्योंकि वह कलीसिया की शुद्धता के प्रति समर्पित था।

आत्मिक शुद्धता के प्रति हमको कितना समर्पित होना चाहिए? कम से कम परमेश्वर अपने लोगों का समर्पण और इस्राएल की रीति के अनुसार उनके अगुवे की शुद्धता चाहता है! यदि उस समय के परमेश्वर के लोगों के लिए शुद्ध रहना इतना महत्वपूर्ण था, तो आज के परमेश्वर के लोग - अर्थात् कलीसिया को, जिसके लिए मसीह ने प्राण दिया था - के लिए पवित्र होना कितना अधिक महत्वपूर्ण है!

जो लोग सफाई के बारे में अधिक चिंतित रहते हैं, जो अपना हाथ घड़ी-घड़ी धोते हैं, वे कुछ अटपटा सा जान पड़ते हैं। यद्यपि संसार में अनिवार्य व्यवहार असामान्य सा लगता है, लेकिन हम मसीही लोगों को अपने आत्मिक जीवन में वैसे

ही होना चाहिए। हमको अपने आपको “संसार से निष्कलंक” (याकूब 1:27; KJV) और कलीसिया को शुद्ध रखने के लिए, समर्पित रहना होगा - और हो सकता है कि कोई इसके बारे में हमको अत्यधिक चिंताशील समझे।

उपसंहार। क्या आप आत्मिक शुद्धता के प्रति समर्पित हैं? यदि आप परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध और पवित्र होना चाहते हैं तो लाल बछिया की राख द्वारा उपलब्ध कराया गया शुद्धिकरण का नमूना आपके लिए यह प्रस्तुत करता है कि आप कैसे शुद्ध हो सकते हैं। लाल बछिया को मारा जाता था; उसका लाल रंग, लहू और प्रायश्चित के बीच की कड़ी पर जोर देता है। मिलापवाले तम्बू की ओर लहू छिड़का जाना उसका शुद्धिकरण करना दर्शाता है और पानी में मिलाया गया बछिया का राख पावन करने का जल ठहरता था जिसका उपयोग लोगों की अशुद्धियां दूर करने के लिए किया जाता था।

हमारे लिए - परमेश्वर का पुत्र यीशु, मारा गया और उसने हमारे लिए अपना लहू बहाया! जो लहू उसने बहाया था वह परमेश्वर की मण्डली, मसीह की कलीसिया, को खरीदने के लिए प्रयोग किया गया था (प्रेरितों. 20:28)। हम उसके लहू के द्वारा शुद्ध किए गए हैं (मत्ती 26:28; इफि. 1:7), और यह शुद्धिकरण तब होता है जब हम मसीह में पाप क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं (प्रेरितों. 22:16)।

हमारा शुद्धिकरण भिन्न है। जब हमारा बपतिस्मा होता है तो हम केवल रीति रिवाज़ के आधार पर ही शुद्ध नहीं किए जाते हैं। हमारा पाप पूरी तरह हम से हटा दिया जाता है।

दूसरे रूप में, हमारा शुद्ध किया जाना इस्राएलियों के समान है। यदि वे रीति रिवाज़ के आधार पर अपनी अशुद्धियां दूर करने में असफल होते थे, तो वे अपने आपको मृत्युदण्ड के योग्य पाते थे। यदि हम यीशु के लहू से शुद्ध नहीं किए गए हैं, तो हम भी हमारे पापों के कारण मृत्युदण्ड के अधीन होते हैं (रोम. 6:23)।

समाप्ति नोट्स

[1]लौरिस्टन जे. डू बोइस, “द बुक ऑफ़ गिनती,” इन *बीकन बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 1, *उत्पत्ति थ्रू व्यवस्थाविवरण* (कन्सास सिटी, मो.: बीकन हिल प्रेस, 1969), 451. [2]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 147. [3]डू बोइस, 451. [4]क्लाइड एम. वुड्स एन्ड जस्टिन एम. रॉजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन मो.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2006), 294. [5]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 660; जे. मिलग्रॉम, “द पेराडोक्स ऑफ़ द रेड काओ (गिनती XIX),” *वेटस टेस्टामेन्टस* 31, नं. 1 (जेनुअरी 1981): 63. [6]अन्यजाति लेखनों में, प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के अन्त तक एक लिखित कार्य के द्वारा प्रमाणित किया गया कि विधिवत शुद्धता के लिए किसी बछड़े की राख का प्रयोग किया जाता था (ओविड *फ़ेस्टी* 4.639-40, 725, 733). [7]*गिनती रब्बाह* 19.1.5. [8]प्रथम सदी में, दुर्घटनावश अशुद्धता से बचने के लिए कब्रों को अक्सर सफेद पोता जाता था (मत्ती 23:27; लूका 11:44)। [9]वुड्स एण्ड रोजर्स, 298. [10]गेन, 660.